दिल्ली में मज़दूरों की हुंकार....

पेज पांच का शेष

ओर से ज्ञापन को स्वीकार किया. उसके पश्चात ही मज़दूर आक्रोश रैली का समापन हुआ.

आज, ये सरकारी दस्तूर एकदम स्पष्ट हो गया है कि मज़दूरों के किसी भी विरोध कार्यक्रम को मंजूरी मत दो. एक साल पहले घोषित, मज़दूरों की इस शांतिपूर्ण एवं अनुशासित रैली को उस भाजपा-संघ सरकार ने नहीं निकलने दिया, जो अभी हाल ही तमिलनाडु में, जहाँ उनका कोई आधार नहीं है, नाज़ी परेडों के अंदाज़ में कुल 50 रैलियां निकालने के मुद्दे पर पूरी तरह अड़ी रही. 44 स्थानों पर रैलियां निकालने की इज़ाज़त मिलने के बाद भी, बाकी 6 स्थानों पर, आर एस एस की वर्दीधारी रैलियां निकालने की अनुमति मिलने तक, मोदी सरकार, तमिलनाडु राज्य सरकार की बांह मरोड़ती रही, ई डी/ सी बी आई की धमकियां देती रही, 'न्याय व्यवस्था' पर दबाव बनाती रही, और अंत में सभी रैलियां कर के मानी. दिल्ली हो या यू पी, हथियार लहराते हुए, उन्मादी-दंगाई भगवाधारियों की रैलियां, अक्सर होती रहती हैं. पुलिस अनुमति ना होने के बावजूद भी पुलिस उन्हें सुरक्षा प्रदान करती है, उनकी आव-भगत को तैयार और तत्पर नज़र आती है. कई बार उन भड़काऊ रैलियों का अंजाम खूनी दंगों में होता आया है. जहांगीरपुरी इसका ताज़ा उदहारण है. लेकिन वह भाजपा है, वह कुछ भी कर सकती है!! उनके लिए कैसा क़ानून और कैसा लोकतंत्र! कैसा भी दुर्दांत हत्यारा, बलात्कारी, फ़ौडिया हो, भाजपा का पट्टा गले में डालते ही संत हो जाता है! 13 नवम्बर को, मज़दूर रैली के मामले में, केंद्र सरकार की दिल्ली पुलिस का रवैया इसके बिलकुल विपरीत था क्योंकि वो मज़दूरों की रैली थी!! घोषित रैली के कार्यक्रम में लाख रुकावटें झेलने के बाद भी मज़दूरों ने संयम नहीं खोया, अनुशासन नहीं तोड़ा क्योंकि वे अपना फ़र्ज़ जानते हैं.

मज़दूर-आन्दोलन की प्रचंड लहर खड़ी करने के लिए, संकीर्णतावादी सोच त्यागना ज़रूरी है

देश के मज़दूर आन्दोलन की सबसे तक़लीफ़देह कमज़ोरी ये है, कि देश में मज़दूर वर्ग की सही क्रांतिकारी पार्टी मौजूद नहीं है. इसी का नतीजा है, कि इस विशाल देश में अनगिनत क्रांतिकारी संगठन/ दल/ मंच अपने-अपने निश्चित दायरे में मौजूद हैं, जो किसी विशेष क्षेत्र अथवा किसी विशेष उद्योग के बीच कार्य कर रहे हैं. अकेले राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली में, जहां औद्योगिक मज़दूरों की कुल तादाद 2 करोड़ से भी ज्यादा है, ऐसे सैकड़ों क्रांतिकारी समूह/ मंच काम कर रहे हैं. मासा के 16 संगठन मिलकर भी, कुल क्रांतिकारी ऊर्जा के एक छोटे से हिस्से का ही प्रतिनिधित्व करते हैं. उनका तरीका सही है, कि आपसी सैद्धांतिक मतभेदों पर चर्चा-डिबेट करते बैठने के बजाए, मुद्दों पर क्रांतिकारी कार्यक्रम के तहत काम की एकजुटता क़ायम हो, आन्दोलन के रास्ते में आगे बढ़ें और साथ ही वैचारिक डिबेट भी ज़ारी रहे जिससे एक सही लेनिनवादी क्रांतिकारी पार्टी के निर्माण की दिशा में आगे बढ़ा जाए. इस प्रक्रिया को इसकी अंतिम परिणति तक पहुँचाने के लिए, लेकिन, ये ज़रूरी है कि इस मंच का लगातार विस्तार होता जाए. छोटे दलों/ मंचों में भी और बड़ी केन्द्रीय ट्रेड यूनियनों में भी. ज्यादा से ज्यादा मज़दूरों को उनकी मुक्ति के संघर्षों से रु ब रु होने का मौक़ा मिले, जिससे अपनी राजनीतिक समझदारी बढ़ाते हुए और अपनी वर्ग चेतना के आधार पर वे 'अपने' दलों/ संगठनों को भी परख सकें. किसान आन्दोलन में हम देख चुके हैं कि संयुक्त किसान मोर्चा के अखिल भारतीय संयोजक, जब संघर्षरत किसानों को छोड़कर मोदी सरकार के सुर में सुर मिलाने लगे तो उन्हीं के संगठन ने उन्हें दुत्कार दिया, कोई उनके साथ नहीं गया, बस गाज़ीपुर बॉर्डर पर स्थित टेंट से उनकी तस्वीर फाड़ दी गई. खरपतवार की ऐसी निराई-गुड़ाई मज़दूर संगठनों में भी होनी तय है.

मासा के घटक संगठनों ने इस आन्दोलन की तैयारी के सिलसिले में, अनेक स्थानों पर साझा प्रचार अभियान भी चलाए लेकिन उनका तरीका उसी तंगनज़री से ग्रस्त नज़र आया, जिससे उनके संगठन जूझ रहे हैं. उनकी ओर से, उनके अपने उस संकीर्ण संगठनात्मक दायरे से बाहर झाँकने का कोई प्रयास नहीं हुआ. मसलन, एक स्थान पर, अगर मासा के किसी एक घटक की ही उपस्थिति है, तब भी सबने उसी दायरे में बंधकर ही प्रसार किया.

वहां मौजूद किसी भी स्थानीय संगठन से इस अभियान में शामिल होने को कहा भी नहीं गया. बल्कि, ऐसी अहेतियत बरती गई कि इस अभियान की भनक भी किसी अन्य मज़दूर को नहीं लगनी चाहिए. मज़दूर संगठनों में भी कुछ उसी तरह की प्रतियोगिता नज़र आती है, जैसी व्यवसायिक प्रतिष्ठानों में होती है. 'दुनिया के मज़दूरों एक हो' नारा लगाते रहो लेकिन नज़र बस 'अपने-अपने' मज़दूरों पर ही केन्द्रित रखो!! दुनिया के मज़दूरों को एक होने में कोई दिक्क़त नहीं, लेकिन मज़दूर नेताओं को, मज़दूर संगठनों को बहुत बड़ी दिक्क़त है!! ये रोग क्रांतिकारी पार्टी की अनुपस्थिति से उपजे के कीटाणुओं से फैला है, जिसका उपचार होता नज़र नहीं आ रहा. देश के स्तर पर, आन्दोलन में, विशाल पैमाने पर मज़दूरों की क्रियाशीलता की गरमाहट ही सही क्रांतिकारी पार्टी को जन्म देगी. वह मंज़िल आनी भी निश्चित है.

'क्रांति' शोषित-पीड़ित बहुसंख्य समाज की अधिकतम क्रियाशीलता से संपन्न होने वाली एक जटिल प्रक्रिया है. देश जितना विशाल होगा, विविधतापूर्ण होगा, ये प्रक्रिया उतनी ही जटिल होगी. हर किसी की, 'अपनी-अपनी क्रांति' नहीं हो सकती. क्रांति पूर्व-निर्धारित (structured) तरीक़े से भी नहीं होती. मज़दूर वर्ग, निसंदेह, क्रांति का सबसे अगुवा दस्ता है. इसीलिए, 'देश के, संगठित व असंगठित, सब मज़दूर हमारे साथ हों, जो साथ नहीं हो सकते वे नज़दीक हों, जो नज़दीक नहीं हो सकते वे भी हमारे बारे में सचेत हों, जागरुक हों', इस लक्ष्य को लेकर चले बिना, हम अपनी मंज़िल तक नहीं पहुँच सकते. 'रस्म अदायगी नहीं, निर्णायक संघर्ष के लिए कमर कसो', अगर हम ये रस्म अदायगी के लिए नहीं कह रहे, तो इसी नज़रिए से चलना होगा. इसके लिए हमें अपनी सारी संकीर्णताओं, जैसे असलियत उजागर होने के डर से कार्यकर्ताओं के बारे में होने वाली तुच्छ व ओछी 'डील', अमुक मंच को दूर रखने की हमारी बात माननी पड़ेगी क्योंकि हम मासा के पुराने 'नम्बरदार' हैं, आदि की चिंताओं से मुक्ति पानी अनिवार्य शर्त है. मासा एक सही प्रयोग है, तेज़ गति से अथवा अपेक्षाओं के अनुरूप ना सही, लेकिन 6 साल से सतत क्रियाशील है. इसके उजले पक्ष के साथ-साथ इसके भूरे पक्ष की भी पड़ताल करना ज़रूरी है, जिससे ये मंच और अधिक सशक्त हो, ज्यादा प्रभावशाली हो; हमारी इस समालोचना का यही मक़सद है.

क्रांति की वस्तुगत परिस्थितियां (objective conditions) परिपक्व हैं. मौजूदा व्यवस्था अब दुःख-तक़लीफों, बदहाली-कंगाली, मंहगाई-बेरोज़गारी के सिवा, कुछ भी देने की स्थिति में नहीं रही. व्यवस्थाजन्य संकट असाध्य है, अगले साल और विकराल होगा; दरबारी सेवादार 'विशेषज्ञ हकीम' भी ये ही कहते नज़र आते हैं. आत्मगत परिस्थितियां (subjective conditions) तैयार करना हमारी सबकी ऐतिहासिक ज़िम्मेदारी है.

हमारे देश में क्रांति सफल होने का मतलब, अकेले हमारे देश में ही नहीं बल्कि समूचे दक्षिण एशिया में क्रांति की ज्वाला का फैल जाना है. इतना ही नहीं, ये देश, 1917 का रूस भी बन सकता है. सही अर्थों में, चौथे कम्युनिस्ट इंटरनेशनल को भी जन्म दे सकता है जिसके परिणामस्वरूप, शोषण-उत्पीडन की ये मानवद्रोही पूंजीवादी-साम्राज्यवादी-फ़ासीवादी व्यवस्था, इस खूबसूरत धरती से ही विदा हो, सूपड़ा साफ़ हो, हमेशा- हमेशा के लिए, कभी ना लौटने के लिए. 'मज़दूर अधिकार संघर्ष अभियान, मासा', इस परियोजना में एक बहुत अहम भूमिका निभाएगा, इस उम्मीद के साथ हम उन्हें क्रांतिकारी बधाई, लाल सलाम प्रेषित कर रहे हैं.

यौनिकता और बच्चे

शरद कोकास

यही कोई दस बारह साल उम्र रही होगी मेरी जब बाबूजी एम एड कर रहे थे । मैं उनके लिए राइटर का काम करता था । उनका विषय फ्रायड के मनोविज्ञान और बच्चों की लैंगिकता से सम्बन्धित था । बाबूजी अपने सामने तीन चार किताबें खोल लेते और बोलते जाते ,कभी आँखें बंद कर कुछ कहने लगते । मैं टेबल कुर्सी पर बैठ कर उनकी बातें एक रजिस्टर में उतारता जाता ।

एक दिन फ्रायड को कोट करते हुए उन्होंने कहा "जिस समय बच्चे माँ का स्तनपान करते हैं उस समय उनके लिंग में उद्दीपन होता है ,इससे सिद्ध होता है कि बच्चों में लैंगिकता की प्रवृत्ति जन्मजात होती है ।"

इस कथन के विस्मृत अनुभव से गुजरने के बावजूद मेरे लिए यह जानकारी नई थी । धीरे धीरे इस विषय में मेरी रूचि जागृत हुई और मराठी की मनोहर मैगजीन के 'कुतुहल' कालम से शुरुआत कर आगे विस्तार से किताबों में मैंने इस विषय को पढ़ा । थोड़ी बहुत बातें मैंने माँ से भी जानीं।

बाद में मैंने प्रोफ़ेसर श्याम मानव का 'बाल लैंगिकता और पैरेटिंग' पर पूरा कोर्स भी किया ।श्याम मानव बताते हैं कि अल्ट्रासाउंड स्टडीज से यह ज्ञात हुआ है कि गर्भाशय के भीतर भी बालक का लिंग उन्नत(इरेक्ट) हो सकता है । जन्म लेने के उपरांत गर्भनाल तोड़ने से पहले कुछ ही मिनटों में अनेक बार बालक का लिंग उन्नत होता है। उसी तरह चोवीस घंटों के भीतर बालिकाओं का योनिस्त्राव भी होता है और भगांकुर या क्लिटोरिस में भी उद्दीपन होता है ।

इसके पश्चात स्तनपान कराते समय भी बालक का लिंग उन्नत होता है और बालिका को योनिस्त्राव तथा भगांकुर में उद्दीपन होता है । शिशुओं को स्नान कराते समय, उनके शरीर पर पावडर लगाते समय, मालिश करते समय या उन्हें खेल खेल में ऊपर उछालते समय भी यह घटित होता है।

मैंने पढ़ा था कि स्तनपान कराते हुए माता के शरीर में ऑक्सीटोसिन नामक हार्मोन उत्पन्न होता है । यह वही हार्मोन है जो सेक्स के दौरान चरमोत्कर्ष के समय स्त्री देह में उत्पन्न होता है । इसीलिये स्तनपान कराते समय माता सुख महसूस करती है ।

एक वर्ष की आयु तक बालक बालिकाएं अपने लैंगिक अवयवों के साथ खेलते हैं। उन्हें स्पर्श करने, हाथ से , तकिये से या किसी वस्तु से रगड़ने आदि में आनंद प्राप्त होता है । इन कामों में बच्चों को चरम आनंद की प्राप्ति भी होती है इसीलिये यदि उन्हें बीच में रोक दें अथवा यौनांगों को छूने से मना करें तो वे चिढ़ते हैं या चिल्लाते हैं , बार बार हाथ वहीं ले जाते हैं।

दो वर्ष की उम्र में जब बच्चे बोलने चलने की आयु में आ जाते हैं तब वे परस्पर एक दूसरे के लैंगिक अवयवों को स्पर्श करने और देखने की इच्छा प्रकट करते हैं , वे डॉक्टर-डॉक्टर, मम्मी पापा, जैसे लैंगिक खेल खेलते हैं । मैंने तो बच्चों को खेल खेल में बच्चों को जन्म देने की प्रक्रिया भी देखी है । खेल खेल में बहुत सुन्दर रोल प्ले वे करते हैं ।

बच्चों के इस तरह लैंगिक खेल खेलने का यह क्रम चार पांच वर्ष की आयु तक जारी रहता है । एक-दूसरे का लैंगिक स्पर्श उन्हें अच्छा लगता है यद्यपि छह सात वर्ष की आयु तक पहुंचते पहुंचते यह कम हो जाता है । इस उम्र में लैंगिक जोक्स , गंदे मज़ाक , अथवा ऐसे शब्द उच्चारण करना भी उन्हें अच्छा लगता है ।

प्रश्न यह है कि यहाँ माता-पिता की और बड़ों की भूमिका क्या हो ? हमारे सामूहिक अवचेतन में यौनिकता को हमेशा बुरी चीज़ माना गया है। वैसे सामान्यतः हम इन बातों की ओर ध्यान नहीं देते लेकिन कभी कभी उनके साथ ऐसा व्यवहार करते हैं जो उन तक नकारात्मक सन्देश पहुँचाता है ।

जब बच्चे अपने यौनांग छूते हैं, हम' छी गंदी बात' कह कर उनका हाथ वहां से हटा देते हैं । बच्चा समझ नहीं पाता कि आंख नाक आदि अंग छूने पर ऐसा क्यों नहीं कहा जाता ? उसी तरह शौच आदि जाने के सम्बन्ध में हम उसे गन्दा काम कहते हैं जबकि यह खाने पीने की तरह हमारे अनिवार्य सामान्य कार्य हैं ।

वैसे तो बच्चे अपने एकांत में लैंगिक खेल खेलते हैं लेकिन अगर हम उन्हें लैंगिक खेल खेलते हुए देखते हैं तो चौंक जाते हैं या डर जाते हैं । हम इसकी कल्पना बड़ों की तरह करते हैं, हम नहीं समझ पाते कि इससे उन्हें कोई नुकसान नहीं है बल्कि यह उनकी स्वाभाविक प्रवृत्ति है । वे इसे खेल की तरह ही खेलते हैं । सामान्यतः जिस घर में या पड़ोस में बच्चे अधिक हो वहां यह सामान्य बात है ।

आप पूछ सकते हैं तो फिर ऐसी स्थिति में हम क्या करें ? इसके लिए पहले तो आपको स्वयं बच्चों का लैंगिकता संबंधी यह मनोविज्ञान समझना होगा फिर बच्चों को उनकी भाषा में समझाना होगा ।

"मैं कहाँ से आया ? "यह प्रश्न हर बच्चे के मन में आता है । "परी तुम्हे देकर गई है" यह जवाब अब पुराना हो गया है "अस्पताल से लाए हैं " यह भी आउट डेटेड । अब बच्चा जानता है कि वह माँ के पेट से आया है लेकिन वह पेट में आया कैसे इस प्रश्न का जवाब देना कठिन है । फिर भी हम उसे गमले में बीज रोपने उसका पौधा बनने जैसी प्रक्रिया से यह बात समझा सकते हैं ।

बच्चों को लैंगिक अवयवों के नाम बताते हुए भी हमें बहुत सोचना पड़ता है । हम उन्हें कुछ भी नाम बता देते हैं । कोशिश करें कि बच्चों को उनके सामान्य नाम बताएँ, न कि फुन्नू, नोनी, नुन्नी या पोपट जैसे शब्दों के द्वारा उनका परिचय दें । अंग्रेजी भाषा इसमें सहायक हो सकती है, उसमे हमें शर्म कम लगती है ।

बच्चे जब लैंगिक शब्द का उच्चारण करें उन्हें उसका अर्थ समझाकर बताएँ । यह भी बताएँ कि सार्वजानिक रूप से इन शब्दों का उच्चारण क्यों नहीं करना है । यह स्वाभाविक है कि बच्चे ऐसे शब्दों से उत्साहित होते हैं और मनोविनोद के लिए भी बार बार इनका उच्चारण करते हैं, इसलिए धैर्य न खोते हुए, उन्हें बिना मारे पीटे, ढंग से समझाएँ । उन्हें गालियों के अर्थ भी बताएँ और यह भी कि इनका प्रयोग क्यों नहीं करना है ।

ज़रूरी है कि हम बच्चों के साथ सेक्स जैसे विषय पर सामान्य रूप से बात करें, उन्हें भाषण नहीं दें, बस सामान्य रूप से समयानुसार एक दो मिनट में अपनी बात कह दें । चित्रों द्वारा उन्हें समझाएं । उन्हें कुछ विशेष बता रहे हैं इस तरह का भाव आपके शब्दों में कदापि न हो । इस बात से भी आशंकित न हों कि उन्हें ज़्यादा बता दिया । उन्हें जितना समझ में आया है उतना ही वे ग्रहण करेंगे बाकि दिमाग से निकाल देंगे या फिर बाद में पूछ लेंगे ।

कुछ बड़े होने के बाद बच्चों के मन में और भी प्रश्न आते हैं लेकिन उन्हें जानकारी देने के लिए उनके बड़े होने की राह न देखें । किशोर अवस्था से पूर्व ही स्तन वृद्धि, मासिक धर्म, स्वप्न दोष, लड़कों के स्तन में गांठ पड़ना, लिंग उन्नत होना, योनि का उत्तेजन, स्त्री पुरुष समलैंगिकता, वेश्या व्यवसाय , प्रजनन इत्यादि के विषय मां भी जानकारी दें ।

इस बात की राह न देखें कि बच्चा इंटरनेट से या किताबों से खुद ही जानकारी हासिल कर लेगा । ध्यान रखिए पोर्न सामग्री व सेक्स एजुकेशन में बहुत अंतर होता है।

बच्चों के समक्ष विचार-विमर्श के लिये प्रश्न भी उठाएँ साथ ही बेटा बेटी दोनो को मासिक धर्म,स्वप्न दोष, जैसी बातों की जानकारी एक साथ दें यह न सोचे कि लड़कों की बातें लड़कों को और लड़कियों की बातें लड़कियों को बताएँगे दरअसल यौन शिक्षा में लड़के लडकी जैसा कुछ होता भी नहीं ।

बालकों द्वारा प्रश्न सहजता से पूछे जायें इस प्रकार का वातावरण बनाएं । यदि आपके पास यौनिकता सम्बंधी जानकारी नहीं है , जिसका आपके स्वयं के संस्कारों के कारण न होना स्वाभविक है , तो अध्ययन करें, जानकारों व मनोवैज्ञानिकों की सहायता लें ।

सारी बातें बताने के बाद समय समय पर इस बात का परिक्षण भी करें कि उन्हें बातें समझ में आई या नहीं चाहें तो लिखित परीक्षा भी ले सकते हैं । बच्चों को टेस्ट देने की आदत तो होती ही है ।

यह बताने कि आवश्यकता तो नहीं कि उनकी देह से उनका परिचय करने के अलावा उन्हें लैंगिक सुरक्षा, नैतिक मूल्य , सत्य कहने की आदत, भावनाओं का निर्माण, निर्णय लेने की क्षमता , और अन्य व्यक्तियों के साथ व्यवहार , रहन सहन जैसे विषयों पर भी बताया जाए ।

एक और महत्वपूर्ण बात । माता-पिता अक्सर बच्चों के आते ही एक दूसरे से दूर बैठ जाते हैं , हाथ पकड़ा हो तो छोड़ देते हैं । उनके सामने चुम्बन, आलिंगन, सम्भोग तो बहुत दूर की बात है । मनोविज्ञान यह कहता है कि बच्चे जब माता -पिता को आपस में प्रेम करते हुए देखते हैं तो उनके मानस में प्रेम की नींव तैयार होती है ।

प्रेम के प्रति यह सकारात्मक दृष्टि की नीव सिद्ध हो सकती है, इसके विपरित झगड़ा करते हुये, एक-दूसरे को दूर करते हुये, धिक्कार करते हुये देखना उनके मन में नकारात्मक दृष्टिकोण के बीज बो सकता है। सोचिये इस दौर में जहाँ नफरत फैलाई जा रही है बच्चों में प्रेम के बीज बोने की कितनी जरुरत है ।

इस तरह बच्चों की लैंगिकता के बहाने हम अपने आप की समझ में भी वृद्धि कर सकते हैं । बच्चों के विकास के विभिन्न चरणों के अनुसार हर अभिभावक और समाज के हर व्यक्ति को यह बात गंभीरता से समझना आवश्यक है । इसी तरह हम आगे चलकर बच्चों का एक स्वस्थ्य मस्तिष्क से युक्त मनुष्य बना पाएंगे , देश में घटित होने वाले यौन अपराधों , और स्त्रियों के दैहिक शोषण, उत्पीड़न आदि पर लगाम लगा पाएंगे ।